[Shrimati Savitry Nigam.]

सन्देह नहीं कि हमारे वित्त मंत्री में वह सब गुण हैं । किन्तु कभी कभी अत्याधिक उत्साह से भी संतुलन खो सा जाता है । इन विकास योजनाओं के लिये जो लम्बी चौड़ी रक़में निश्चित की गई हैं उन्हें देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि या तो इस बजट के निर्माण करते समय वित्त मंत्री ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर मंडराने वाले उन काले बादलों की छाया का अनुभव नहीं किया और या फिर उस समय परिस्थितियां इतनी बिगड़ी नहीं होंगी और या उन्होंने वह रूप न धारण किया होगा जो आज है । श्रीमान्, प्रधान मंत्री की दी हुई कल की स्पीचेज (speeches) में यह बिलकुल साफ साफ विदित हो गया, विशेषकर श्री वाल्टर राबर्टसन की स्पीच का हवाला देते हुए जो उन्होंने यह बताया कि खुल्लमखुल्ला किस प्रकार अमेरिका एशिया पर पूरी तरह से हावी होने का निश्चय कर चुका है । उन्होंने साफ़ साफ़ कहा है कि अमेरिका एशिया पर एक लम्बे अरसे तक अनिश्चित् काल तक डौमिनेट (dominate) करना चाहता है । ऐसी नाज़ुक स्थिति में हमें यह अवश्य सोचना चाहिये कि हम कहां तक विदेशी सहायता पर निर्भर कर सकेंगे और कहां तक इतनी लम्बी चौड़ी रकमों द्वारा अपने विकास के कार्यों की योजना बना सकेंगे । श्रीमन्, अभी तक तो शुगर-कोटेड (sugar coated) तरीकों से ही, दूसरे मुल्कों की आर्थिक सहायता के बहाने से ही अमरिका ने अपने ट्रेप (trap) में उन्हें फंसाने का जाल बिछाया, किन्तु अब लालच और तृष्णा यहां तक बढ़ गई है कि उसने, बावजूद हम लोगों के तरह तरह के विरोध करने के, पाकिस्तान और अमेरिका के बीच हुए पैक्ट (pact) के बारे में साफ़ साफ़ यह कहा है कि अगर भारतवर्ष भी इस तरह की कोई सहायता चाहे तो अमेरिका इस पर विचार करेगा । श्रीमन् यही नहीं कि हम लोग उनके इस कथन का पूरी तरह से विरोध करते हैं, और हम लोगों को यह बेहद अपमानजनक मालूम हुआ है, हमें यह भी अपने मन में सोच लेना चाहिए कि हम अब ऐसे किसी देश से जो किसी न किसी तरह हमें अपने ट्रेप में फंसाना चाहता है किसी तरह की आर्थिक सहायता नहीं लेंगे । सम्भव है कि उससे हमें अपनी विकास योजनाओं को थोड़ा संतुलित करना पड़े, लेकिन हमें अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिये क्यों न यह कह देना चाहिये कि हमें तुम्हारी आर्थिक सहायता भी नहीं चाहिये और कृपा करके हमें स्वाभिमानी और निर्धन ही रहने दो । श्रीमन्, यह हमारा कोरा भ्रम है कि हम बिना विदेशी सहायता के, बिना विदेशी पूंजी के, अपने निर्माणकार्यों को पूरा कर ही नहीं सकते अथवा हमारे निर्माण कार्यों में रुकावट आ जायगी । हां, यह अवश्य है कि कुछ ऐसी चीजें हैं जिनके लिये हमें प्रायर्टी (priority) देनी है, उनके लिये योजना हम अभी चालू कर सकते हैं । लेकिन जिन चीजों को हमें प्रायर्टी देना आवश्यक नहीं है उन्हें हम थोड़े दिनों के लिये बड़ी आसानी से स्थगित कर सकेंगे ।

[For English translation, see Appendix VII, Annexure No. 90.]

MR. DEPUTY You may continue the day after tomorrow. The House stands adjourned till 2 o'clock the day after tomorrow.

The Council then adjourned till two of the clock on Thursday, the 4th March 1954.